Saathi

Date 08/05/2020 PAGE No. 1 to 3

B.A., PART-I
POLITICAL SCIENCE
PAPER-1 (BASIC PRINCIPLES OF POLITICAL THEORY)
CHAPTER-9 (THE CONCEPT OF LIBERTY)
LECTURE NO. - 23 (TWENTY THREE)

By: OM KUMAR SINGH
ASSISTANT PROFESSOR
DEPTT. OF POL. SC.
D.B. College, Jaynagar
L.N.M.U., Darbhanga

नकारात्मक स्वतंत्रता
Negative Liberty

इसका अर्थ है- बंधनों का अभाव। बंधनों का अभाव का मतलब स्वच्छंदता या अराजकता नहीं। वैसा बंधन जो मानव के व्यक्तित्व के विकास में बाधक हो, को दूर करना या उससे मुक्त होना नकारात्मक स्वतंत्रता है। इसमें सभी प्रकार के बंधन या प्रतिबंध को अच्छा नहीं माना जाता है। मैकेंजी के शब्दों में, "स्वतंत्रता सभी के प्रतिबंधों का अभाव नहीं, अपितु अनुचित प्रतिबंधों के स्थान पर उचित प्रतिबंधों की व्यवस्था है।"

नकारात्मक स्वतंत्रता से संबंधित प्रमुख विचारक हैं-
(i) बेंथम (ii) जे० एस० मिल (iii) बर्लिन (iv) फ्रीडमैन (v) डी० टॉकविले (vi) स्पेंसर (vii) एडम स्मिथ (viii) रिकार्डो (ix) हेयक (x) नॉजिक

नकारात्मक स्वतंत्रता के संबंध में जे० एस० मिल के विचार :-

जॉन स्टूअर्ट मिल के द्वारा 1859 ई० में प्रकाशित अपने निबंध 'On Liberty' में नकारात्मक स्वतंत्रता के संबंध में प्रमुखतया से उल्लेख किया गया है। मिल के अनुसार, व्यक्ति का उद्देश्य अपने व्यक्तित्व का उच्चतम एवं अधिकतम विकास है और यह विकास केवल स्वतंत्रता के वातावरण में ही संभव है। यदि मानव को स्वतंत्रता नहीं दी जाए तो उसके जीवन का मूल्य लक्ष्य ही विफल हो जाएगा।

Page No.

Scanned with CamScanner

Saathi

Date __ /__ /____

समाज की उन्नति और विकास के लिए भी व्यक्ति को अधिकतम स्वाधीनता देना आवश्यक है। मिल के शब्दों में, " व्यक्ति के जीवन में राज्य का न्यूनतम हस्तक्षेप और अधिकतम सम्भव सीमा तक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने की छूट ही स्वतंत्रता है और वह इसे अपने पर बल देता है।"

मिल महोदय ने व्यक्ति - स्वातन्त्र्य के दो पहलुओं पर बल दिया है-

(I) विचार स्वातंत्र्य

(II) कार्य स्वातंत्र्य

(I) इनके अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को विचार और अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए तथा राज्य के द्वारा किसी भी प्रकार की विचारधारा या भावाभिव्यक्ति पर कोई बंधन नहीं लगाया जाना चाहिए।

मिल न केवल सभी सामान्य व्यक्तियों वरन सनकी व्यक्तियों को भी विचार की स्वतंत्रता देने के पक्ष में है।

(II) कार्य स्वातंत्र्य -

मिल ने मानव कार्यों को दो भागों में विभाजित किया है-

(क) स्व-विषयक (Self-regarding) -

यह व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से सम्बंधित होता है। इन कार्यों में व्यक्ति को पूर्ण स्वाधीनता होनी चाहिए।

(ख) पर-विषयक (Others regarding) -

ऐसे कार्य, जिनका प्रभाव समाज के अन्य व्यक्तियों के जीवन पर पड़ता है। इन कार्यों में व्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

Saathi

Date __ /__ /____

खासकर जब उसके कार्यों से समाज के अन्य व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधा पहुँचती है।

मिल, व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु राज्य के हस्तक्षेप सहित असहिष्णु समाज, बहुमत और परम्पराओं के दबाव की भी वकालत करते हैं।

हम यदि आज की परिस्थितियों में [redacted] उपर्युक्त वर्णित मिल के विचार का विश्लेषण करेंगे, तो पाएँगे कि यह वास्तविक स्वतंत्रता के रूप नहीं है। इसी वजह से अर्नेस्ट बार्कर ने टिप्पणी किया है कि, "मिल हमें खोखली स्वतंत्रता और काल्पनिक व्यक्ति का पैगम्बर लगता है। व्यक्ति के अधिकारों के सम्बंध में, उसके पास कोई स्पष्ट दर्शन नहीं था, जिसके आधार पर स्वतंत्रता की धारणा को कोई सार्थक रूप प्राप्त हो पाता है।"

× —— × —— × —— × —— × —— ×

<u>संभावित प्रश्न</u> :-

नकारात्मक स्वतंत्रता से आप क्या समझते हैं? इस प्रसंग में जे॰एस॰ मिल के विचारों की विचारों की विवेचना कीजिए।

Scanned with CamScanner